अध्याय - 1

परिचय

" प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन विषय की अवधारणा; लक्ष्य एवं उद्देश्य; साहित्य खोज; अध्ययन पद्धति एवं प्रविधि; अनुसंधान की रीति; परिकल्पना और क्षेत्र एवं सीमाएं का विवेचन किया गया है ।"

अवधारणा -

किसी अन्य संसाधन की भांति सूचना संसाधन भी मानव जाति के लिए अत्यंत आवश्यक है । समकालीन भारतीय समाज नब्बे के दशक में औद्योगिक समाज का सूचना तकनीक समाज के रूप में महत्वपूर्ण गहन परिवर्तन की गवाही रही है । परिवर्तन की इस लहर ने अर्थव्यवस्था जीवन शैली, मनोरंजन उद्योग, औद्योगिक उत्पाद तथा कृषि के क्षेत्र में प्रभावकारी दस्तक दिया । समाज के विकास में सूचना, शक्ति का कार्य करती है इसलिए विश्व की चार क्रांतियों (औद्योगिक, व्यापारिक, कृषि तथा सूचना क्रांति) में सूचना क्रांति अपना विशेष स्थान रखती है । किसी देश की सूचना स्थिति के आधार पर उस देश के विकास का गणन किया जा सकता है । [59,111]

सूचना मनुष्य जाति के लिए जीवन-दायिनी है । मनुष्य इससे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से घिरा रहता है । सूचना की महत्ता सर्वत्र है । समस्या निदान एवं उचित निर्णय लेने में यह एक अपरिहार्य तत्व है । सूचना अग्नि, जल, वायु के समान चौथा सजीव तत्व है । बिना सूचना के किसी भी गतिविधियों का प्रवाह असंभव है । सूचना के कमी के वजह से ही हमारे अनेक राष्ट्रीय कार्यक्रम के अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होते । उपलब्ध सूचना की अनभिज्ञता का अर्थ तीव्रता से नकल करने की जोखिम में वृद्धि करना है, जो पूर्व अर्जित ज्ञान और अनुभव को अनदेखा करने के बराबर है । जिस तरह जल चक्र में जल एक आवश्यक घटक है उसी तरह सूचना देश के विकास एवं समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण इनपुट (दी जाने वाली ऊर्जा) है । इस तरह सूचना राष्ट्र कल्याण एवं विकास के लिए राष्ट्रीय संसाधन है । राष्ट्र कल्याण में सूचना प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका है । इस तेजी से बदलते समाज के लिए सूचना एक महत्वपूर्ण संसाधन है । इस प्रकार समाज एवं सभ्यता के प्रगति के लिए सूचना अति आवश्यक आधार है । [103]

किसी भी राष्ट्र की सामाजिक - आर्थिक विकास उसके उत्पादकता पर निर्भर करता है । उत्पादकता उस देश के स्वस्थ्य औद्योगिक विकास पर निर्भर है और जिसके लिए दो घटक

चाहिए -

1. बौद्धिक निवेश और

2. अच्छे तकनीकी अपनाना

इस उद्देश्य के लिए प्रथम बिन्दु वैज्ञानिक और तकनीकी सूचना का अधिकतम उपयोग से है तथा दूसरा प्रतिष्ठित संगठनों के श्रमिक वर्ग में अन्य स्त्रोतों से प्राप्त सूचना का आदान-प्रदान से संबंधित है। यह वृहत और मध्यम स्तर के उद्योग में दृष्टव्य है। लघु उद्योगों के स्थापना और विकास में सूचना की क्रांतिक भूमिका है। निर्मित उत्पाद के प्रकार, उत्पाद का क्रयकर्त्ता, उपभोक्ताओं के आवश्यकता और मांग के पहचान सूचना का ही प्रतिफल है।

छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा एवं रायगढ़ क्षेत्र के बुनकर समुदाय (कोष्टा) की कोसा वस्त्र उद्योग अपना सुखद अतीत लिए हुए है। हस्तकरघा से बने हुए कोसा के कपड़े के लिए कोष्टा समुदाय ने देश में छत्तीसगढ़ की प्रतिष्ठा को समृद्ध किया है। इस समुदाय का हाथकरघा उद्योग रोजगार के क्षेत्र में कोई अवरोध न बनते हुए स्वयं के परिवार के साथ-साथ ग्रामीण लोगों के लिए रोजगार उपलब्ध कराना इनका कार्य रहा है। वे अपनी आजीविका स्वयं चलाते हैं तथा कलात्मक हाथकरघा वस्त्र निर्माण करके विदेशी मुद्रा (कपड़ों को निर्यात करके) अर्जित करने में राज्य और देश की मदद करते हैं। संसार के हाथकरघा उद्योग के नक्शे में भारत का एक विशिष्ट स्थान है। विशेषकर छत्तीसगढ़ के रायगढ़ क्षेत्रीय कोष्टा (बुनकर) समुदाय इस उच्च कलात्मक तकनीक और लोकप्रियता के केन्द्र बिन्दु हैं। [58]

इस प्रकार आजादी के लंबी अवधि बीत जाने के उपरांत भी काफी अरसे से तिरस्कृत कोष्टा समुदाय के हस्तकरघा उद्योग के विकास के दृष्टिगत उनकी सूचना आवश्यकता को जानने का प्रयास नहीं किया गया है। शोधार्थी का मानना है कि छत्तीसगढ़ में ग्रामीण समुदाय की सामाजिक - आर्थिक सूचना आवश्यकताएं एक अध्ययन के अंतर्गत जांजगीर - चांपा एवं रायगढ़ क्षेत्र के बुनकर समुदाय (कोष्टा) की सूचना आवश्यकताओं का विशेष अध्ययन ग्रामीण हस्तकरघा उद्योग के विकास के लिए राज्य एवं देश में सामुदायिक सूचना तंत्र को प्रभावी बनाने की दिशा में सहायक हो सकेगी।

उक्त विषय शोध प्रबंध के चयन में यह कारक प्रभावी रहा कि शोधार्थी का स्वयं

ग्रामीण परिवेश से सरोकार रहा है और अपने आस-पास के बुनकरों की सामाजिक - आर्थिक स्थिति एवं समस्याओं से भिज्ञता ही इस विषय में अध्ययन करने की प्रेरणा एवं रूचि जागृत की ।

लक्ष्य एवं उद्देश्य :-

बिना आधार भूत उद्देश्य और संकल्पना के कोई भी शोध की प्रक्रिया सार्थक नहीं हो सकती । इसलिए प्रस्तुत अध्ययन के निम्न प्रमुख उद्देश्य है :-

1- कोष्टा समुदाय के बुनकरों की वर्तमान व वास्तविक सूचना आवश्यकताएं ज्ञात करना।

2- उन क्षेत्रों की पहचान करना जिन क्षेत्रों में उन्हें सूचनाओं की आवश्यकता है ।

3- उन स्त्रोतों को निर्धारित करना जिन पर उनका समुदाय संचार साधनों के साथ निर्भर है।

4- उन कठिनाईयों की पहचान करना जो उन्हें प्रारंभिक सूचनाएं प्रदान करने में रूकावटें पैदा करती है ।

5- ग्रंथालय पाठकों की संख्या का सांख्यकीय आंकड़े यदि हो तो अध्ययन क्षेत्र के कोष्टा समुदाय के मध्य लेना ।

6- सार्वजनिक पुस्तकालय की सुविधा और उपलब्ध सेवाओं के प्रति कोष्टा समुदाय को जागरूक बनाना ।

7- क्षेत्र विशेष के कोष्टा समुदाय के लिए सामुदायिक सूचना केन्द्र के लिए योजनाएं बनाना व उनका विकास करना ।

8- उनके व्यवहार व लक्ष्य में इस प्रकार इच्छा जागृत करना कि वे अपने व्यवसाय के लिए सामुदायिक सूचना सेवा को स्वीकार करें ।

9- बुनकर समुदाय की उत्पाद को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विश्वभर के बाजारों तक विस्तारित करना ।

साहित्य खोज :-

किसी भी शोध के लिए साहित्यिक खोज या साहित्यिक समीक्षा सबसे महत्वपूर्ण

होता है । वास्तव में साहित्य खोज किसी विषय विशेष में साहित्य के परिमाण को जानने के लिए उसके विस्तार तथा सीमाओं के ज्ञान के लिए सार्मथ्य प्रदान करता है । वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य के लिए संस्थाओं से चुनिदा साहित्य का एकत्रीकरण मानवीय और प्रलेखीकरण स्त्रोतों से समय की न्यूनता की वजह से किया गया ।

लेखों का एकत्रीकरण विषय के भौतिक उपलब्धता पर होता है । उन विषयों के लिए जिसे अन्य स्त्रोतों से अध्ययन विश्लेषण और कार्य संपन्न हुआ के लिए बाङ्मयात्मक संदर्भ ग्रंथ को माध्यम बनाया गया । साहित्य का विश्लेषण प्रदर्शित करता है कि छत्तीसगढ़ के रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर समुदाय (कोष्टा) जो मानव सभ्यता को आधुनिक रूचि के विविध वस्त्रों के निर्माण में हस्तकरघा उद्योग क्षेत्र में प्रमुख आधार स्तंभ है, उनके सूचना आवश्यकताओं को जानने के लिए कोई अनुसंधान अभी तक नहीं हुआ है । समय की अल्पता तथा प्रस्तुत स्थानीय संशाधनों की सीमित उपलब्ध की वजह से प्रस्तुत उद्देश्य के लिए लेखों का संकलन और विश्लेषण किया गया । 140 संदर्भ ग्रंथ सूची के अतिरिक्त उन लेखों को भी इस विश्लेषण में सम्मिलित किया गया जो भौतिक रूप से उपलब्ध नहीं हो पाये । यद्यपि समस्त संदर्भ सूचना आवश्यकताएं, उपभोक्ता अध्ययन, सूचना खोज इत्यादि से कुछ न कुछ संबंधित ही है ।

डॉ. रंगनाथन के अनुसार ''प्रत्येक मानव को उसके/उसकी सूचना मिलें '' का आशय है - ''सभी के लिए सूचना अर्थात भेदभाव रहित सूचना '' सभी के लिए प्रत्येक स्थान पर होता है । डा. रंगनाथन के उक्त सपने को साकार करने के लिए सामाजिक महत्व के ऐसे वास्तविक अध्ययन पर जोर डालने की जरूरत है ।

अध्ययन पद्धति एवं प्रविधि :-

प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रत्यक्ष सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति एवं साक्षात्कार अनुसूचि प्रविधि का उपयोग किया गया है । कोष्टा समुदाय की सूचना आवश्यकता से संबंधित जानकारी एवं समंक प्राप्त करने के लिए संरचनात्मक प्रश्न में उनके कच्चे माल, बनाने की विधि, कटाई, आकार-प्रकार, मांग, बेचने के स्त्रोत, साज-सज्जा प्रशिक्षण, सरकारी व सहकारी वित्तीय सहायता, निर्यात, गुणात्मकता तथा उनके उत्पाद के प्रचार- प्रसार से संबंधित तथ्यों को शामिल किया गया है

अध्ययनरत् समुदाय व व्यापार पर उपलब्ध सामाग्री से सूचना की अर्पाप्यतता के

दृष्टिगत व्यवसाय से संबंधित व्यक्तियों, एजेंसियों, सरकारी प्रशिक्षण केन्द्रों, सहकारी समितियों, बिक्री केन्द्रों से तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त किया गया है ।

प्रस्तुत अध्ययन में समंको का प्रस्तुतिकरण हेतु वर्गीकरण एवं सारणीयन इसी ध्येय को लेकर किया गया है कि आकड़े दिखने में सुन्दर तथा समझने में आसान एवं सुस्पष्ट लगे।

अनुसंधान की रीति :-

जब समस्त समूह की जांच न करके संपूर्ण में से किसी विशिष्ट आधार पर न्यादर्श के रूप में थोड़ा सा भाग जांच के लिए लेकर अध्ययन किया जाता है उसे निदर्शन अनुसंधान रीति कहते हैं । [120]

प्रस्तुत शोध प्रबंध के लिए अध्ययन क्षेत्र के कोष्टा समुदाय के 300 बुनकर इकाई परिवार का अध्ययन न्यादर्श रीति से चुनाव कर अध्ययन किया गया है । न्यादर्श इकाई से प्राप्त सूचनाएं का निष्कर्ष अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक बुनकर परिवार पर लागू होगा ।

न्यादर्श चुनने के कई रीतियों में से शोधकर्त्ता ने वर्गीकृत दैव निदर्शन को अपनाया है। इस विधि के अंतर्गत समग्र की सभी इकाईयों को उनके गुणों के आधार पर अलग-अलग वर्गो में बांट दिया जाता है । इसके बाद प्रत्येक वर्ग से दैव प्रतिदर्श विधि द्वारा न्यादर्श का चुनाव किया जाता है । [120]

इस प्रकार वर्गीकृत न्यादर्श पद्धति में कोई भी महत्वपूर्ण पहलू या समूह नहीं रह जाता जिसका प्रतिनिधित्व न्यादर्श में न हो । इसलिए शोधार्थी ने शोध प्रबंध के लिए वर्गीकृत दैव निदर्शन पद्धति को न्यादर्श चयन में अपनाया है ।

परिकल्पना :-

प्रस्तुत अध्ययन के अनुकूल निम्नलिखित परिकल्पना सूत्र रूप में पिरोये गए जो कि विविध स्त्रोतों और संचार माध्यमों से जुड़े हुए हैं जिनसे कोष्टा समुदाय अपने व्यवसाय के लिए दिन- प्रतिदिन सूचना मांग को ग्रहण करते हैं :-

1- पुस्तकालय भ्रमण

2- विषय के साहित्य का सुक्ष्म जांच

3- समूह परिचर्चा

4- शासकीय कार्यालयीन सूचना

5- शासकीय तथा अशासकीय एजेंसियों द्वारा बनाए गये प्रशिक्षण तथा कार्य शालाएं में उपस्थिति ।

6- वित्तीय एजेंसियों, प्रायोजकों इत्यादि से संपर्क एवं सलाह

7- विज्ञापन

8- दूरभाष

9- डाक-पत्र

10- व्यक्तिगत यात्रा

11- उद्देश्य के लिए प्रतिनिधि नियुक्ति ।

अध्ययन क्षेत्र :-

शोधार्थी ने अनुसंधान प्रारंभ करने के पूर्व अध्ययन विषय के क्षेत्र को सुनिश्चित किया क्योंकि इससे समय, श्रम व धन दुरूपयोग नहीं होता साथ ही शोध का श्रेष्ठतम परिणाम पर पहुंचा जा सकता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के लिए जांजगीर -चांपा एवं रायगढ़ क्षेत्र के बुनकर समुदाय (कोष्टा) के सूचना आवश्यकता में हस्तकरघा संबंधित सूचना अध्ययन के विशेष क्षेत्र है । अर्थात जांजगीर- चांपा एवं रायगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले बुनकर समुदाय (कोष्टा) के हस्तकरघा से संबंधित सूचना आवश्यकता का अध्ययन किया गया है ।

प्रस्तुत अध्ययन के प्रसंग में सूचना आवश्यकता शब्द में सूचना खोज व्यवहार और विविध क्षेत्र या विषय जिन पर कोष्टा समुदाय को हस्तनिर्मित बुनाई तकनीक से संबंधित सूचना की आवश्यकताएं होती है सम्मिलित है । यह अध्ययन यह भी बतलाता है कि वे अपनी सूचनाएं कैसे प्राप्त करते हैं, कौन सी संचार माध्यम अपनाये हुए हैं, उनकी सूचना प्राप्त करने के स्त्रोत क्या हैं, और उन्हें अपने बुनाई व्यवसाय से संबंधित सूचना प्राप्ति में क्या कठिनाइयां हैं ।

अध्ययन -क्षेत्र के बुनकरों की उत्पत्ति एवं विकास, सामाजिक मान्यताएँ, सामान्य लक्ष्ण, व्यवसायिक एवं सामाजिक -आर्थिक व कार्य स्थिति को भी अध्ययन क्षेत्र में समाविष्ट किया गाया है ।

अध्ययन की सीमाएँ :-

छत्तीसगढ़ के जांजगीर - चांपा एवं रायगढ़ क्षेत्र में निवासरत् बुनकर समुदाय (कोष्टा) की हाथकरघा से संबंधित सूचना आवश्यकता का अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबंध की अध्ययन सीमा है । अध्ययनरत् समुदाय एवं विषय से संबंधित साहित्य का अभाव शोधार्थी को प्राथमिक समंक संकलन के लिए विवश किया । अध्ययन क्षेत्र में लगभग 2200 बुनकर परिवार (कोष्टा) विद्यमान है । समयाभाव की वजह से उन सभी बुनकरों से प्रत्यक्ष संपर्क संभव नहीं था अतः साक्षात्कार /प्रश्नावली अनुसूचि पद्धति की उपयोग से 300 बुनकरों (कोष्टा) से समंक संकलित किया गया है ।

अध्ययन विषय में विस्तृत एवं गहराई से अध्ययन करने के लिए चाहे जितना भी समय हो कम ही है । विशेष उल्लेखनीय है कि शोधार्थी शासकीय सेवक होने के वजह से अपने संपदीय कर्तव्य व दायित्व के निर्वहन के साथ- साथ शोध प्रबंध को समय-सीमा में पूर्ण करने का प्रयास किया है । अतः समयाभाव भी अध्ययन की सीमा है ।

---000---